व्यंग्य

कवि कालीदास का जन्मस्थान

रवींद्रनाथ त्यागी

खैर, पर्दा जो था उसे मैं फाश करता हूं। वर्षों की निरंतर खोज के बाद मैं इस एतिहासिक और भौगोलिक निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि कालिदास उत्तर प्रदेश के थे, और उस उत्तर प्रदेश में भी मेरे ज़िले के थे। दक्षिण के सुधिजनों ने एक बार कहा था कि शेक्सपियर जो था वह शेशाप्पा अययर नाम का एक मद्रासी ब्राह्मण था, जो पुराने जन्म के पापों के प्रभाव से म्लेच्छ भाषा में लिखने लगा था। पंजाब के बुद्धिजीवियों ने तुरन्त घोषणा की थी और साबित किया था कि दक्षिणपंथियों का दावा सारहीन है, क्योंकि शेक्सपियर दरअसल ज़िला गुजरांवाला का रहने वाला था। और उसका नाम शेखपीर था। शेखपीर से वह शेख प्यारा हुआ और उसके बाद अंग्रेजी उच्चारण में वह शेक्सपियर कहलाया। ये सारे मत हिंदुस्तान टाइम्स में छपे। मैं पूछता हूं कि यदि शेक्सपियर जिला गुंजरांवाला में प्रकट हो सकता है तो कवि कालिदास मेरे ज़िले बिजनौर का निवासी क्यों नहीं हो सकता ?

इतना तो लगभग निश्चित हो ही चुका है कि कवि कालीदास नाम के सज्जन कभी-न-कभी-हुए जरूर थे। क्योंकि किसी और देश ने उनके बारे में अपना कोई दावा अभी तक दायर नहीं किया है, इस कारण यह स्वीकार करना भी न्यायसंगत ही होगा कि कालिदास मात्र हुए ही नहीं थे वरन भारत में ही हुए थे। अब सिर्फ़ दो मुद्दे बाकी रह जाते हैं: एक तो यह कि वे कब हुए थे और दूसरा यह कि उनका जन्मस्थान कहां था। पहला मुद्दा श्रीलाल शुक्ल ने हल कर ही दिया है; उनकी खोज के अनुसार कालिदास का जन्म चौथी शताब्दी में (क्योंकि वे विक्रमादित्य के समकालीन थे) और मृत्यु दसवीं शताब्दी में (क्योंकि राजा भोज दसवीं शताब्दी के राजा थे) मानना शास्त्र-सम्मत होगा। छः सौ वर्ष की आयु कालिदास-जैसे कवि के लिये ज़्यादा नहीं क्योंकि रससिद्ध कवीश्वरों की काया तो जरा और मरण दोनों से मुक्त होती है। अब मात्र मुद्दा क्रम संख्या दो बचता है सो उसे मैं हल करता हूं।

'हावड़ा पंडित समाज' के अनुसार कालिदास बंगाली थे। इस मत के पीछे काफ़ी तर्क दिए गए। पहले तो ऋतु-संहार में वर्ष का प्रारम्भ ग्रीष्म ऋतु से माना गया जो कि बंग देश की प्रथा रही। दूसरे, मेघदूत में आषाढ़ के पहले दिन की ही चर्चा क्यों की गई, दूसरे या तीसरे दिन की क्यों नहीं? महीनों के प्रथम दिन की चर्चा करना बंग देश में ही प्रचलित था। तीसरे, कालिदास ने ग्रीष्म ऋतु के गुण इतने गाए कि देश के किसी और भाग का निवासी वैसा कर ही नहीं सकता। शेष भारत में तो सिर्फ़ गधे को छोड़कर गर्मी किसी को इतनी नहीं भाती। चौथे, कालीदास ने यह कहा कि पके आम बड़े मधुर होते हैं और पांचवें, उसकी कृतियों से यह भी पता लगा कि उसने ऐसे प्रदेश का वर्णन किया जहां कि झीलें, तालाब और नदी-नाले काफ़ी इफ़रात के साथ पाए जाते थे। इन ढेर सारे प्रमाणों के सामने अगर कालिदास खुद भी खड़ा होता तो शायद यही कहता कि हां भाई. मैं बंगाली हूं: एकदम बंगाली। सफ़ेद रसगुल्ले लाओ और मेरा पीछा छोड़ो। मुझे इसी हफ़्ते अगला महाकाव्य लिखना है। राजा विक्रमादित्य का जन्मदिन अगले बुधवार को है और मैंने अभी तक उस सुमुखी वेश्या के कारण एक पंक्ति भी नहीं लिखी।

प्रचीन इतिहास के अधिकारी ज्ञाता डॉ. गोविंद चंद्र पांडेय ने बंगवासियों का दावा स्वीकार नहीं किया। उनकी वाणी के अनुसार कालिदास को सारी ऋतुएं बराबर पसंद थीं और वे सारे भारत के हैं; किसी एक प्रदेश विशेष के नहीं। उन्हें हिमालय की उतनी ही जानकारी है जितनी कि दक्षिण के समुद्र तटों की। डॉ. पांडेय के अनुसार जो कुछ भी सबूत मिलते हैं उनके अनुसार कालिदास पश्चिम भारत के निवासी थे। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार कालिदास ने पश्चिम भारत के नगरों और ऋतुओं का विवरण दिया है। उससे साफ़ जाहिर है कि वे पश्चिमी भारत के थे, काश्मीर, बंगाल, केरल, तमिलनाडु या राजस्थान के नहीं। डॉ. पांडेय के अनुसार आम तो गालिब भी खाया करते थे मगर वैसा करने से वे बंगाली तो नहीं हो जाते। अंत में उन्होंने कहा कि अभी और खोज होनी है और पूरी सच्चाई का पर्दाफ़ाश तभी होगा।

बंगाल के जिन विद्वज्जनों ने कालिदास को बंगवासी सिद्ध करने की चेष्टा की है, मेरे, विचार में वे एक काफ़ी बड़ा तर्क देना भूल गए और वह तर्क है कवि का नाम। चंडिदास, गोविंददास और देवदास- इन महान नामों पर यदि ध्यान दिया जाए तो जाहिर होता है कि कालिदास भी बंगाल के ही वासी रहे होंगे। मुझ दासानुदास की राय के मुताबिक यदि यह तर्क अपनाया गया होता तो कुछ दिनों बाद सूरदास, केशवदास और तुलसीदास को भी बंगाली घोषित किया जा सकता था। खैर, जो हो गया सो हो गया। वैसे भी यह संभव है कि कवि का असली नाम कालिदास न होकर कुछ और ही रहा हो। मैंने विमलराय की 'देवदास' देखी और बाद में पता चला कि देवदास का असली नाम दिलीप कुमार था। यह बात मैंने जब एक बुजुर्गवार से बताई तो वे बोले कि जो तस्वीर उन्होंने कभी देखी थी उसमें देवदास का असली नाम कुंदनलाल सहगल था। मैं चुप हो गया।

खैर, पर्दा जो था उसे मैं फाश करता हूं। वर्षों की निरंतर खोज के बाद मैं इस एतिहासिक और भौगोलिक निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि कालिदास उत्तर प्रदेश के थे, और उस उत्तर प्रदेश में भी मेरे ज़िले के थे। दक्षिण के सुधिजनों ने एक बार कहा था कि शेक्सपियर जो था वह शेशाप्पा अययर नाम का एक मद्रासी ब्राह्मण था, जो पुराने जन्म के पापों के प्रभाव से म्लेच्छ भाषा में लिखने लगा था। पंजाब के बुद्धिजीवियों ने तुरन्त घोषणा की थी और साबित किया था कि दक्षिणपंथियों का दावा सारहीन है, क्योंकि शेक्सपियर दरअसल ज़िला गुजरांवाला का रहने वाला था। और उसका नाम शेखपीर था। शेखपीर से वह शेख प्यारा हुआ और उसके बाद अंग्रेजी उच्चारण में वह शेक्सपियर कहलाया। ये सारे मत हिंदुस्तान टाइम्स में छपे। मैं पूछता हूं कि यदि शेक्सपियर जिला गुंजरांवाला में प्रकट हो सकता है तो कवि कालिदास मेरे ज़िले बिजनौर का निवासी क्यों नहीं हो सकता ?

अब मैं मज़ाक का मूड छोड़ता हूं और बात को गंभीरता से शुरू करता हूं। कवि कालिदास सूबा आगरा और अवध, कमिश्नरी रुहेलखंड और ज़िला बिजनौर के निवासी थे-इस मत की पुष्टि के लिए जो न्यायसंगत तर्क मुझे प्राप्त हुए हैं वे इस प्रकार हैं-

(अ) ऋतुसंहार अभी तक अप्रामाणिक पुस्तक है। उसके आधार पर कालिदास को बंगदेशी सवीकार करना ठीक नहीं। वैसे निराला ने भी बंगाल के वसंत की महिमा गाई है पर चूंकि उन्होंने भी महिषादल की महिषी का दुग्धपान किया था, उनकी वाणी को भी निष्पक्ष स्वीकार नहीं किया जा सकता।

(ब) कवि ने जो कुछ भी भूगोल वर्णित किया है उससे पूरी तरह सिद्ध हो जाता है कि वे बिजनौर के थे। 'मेघदूत' में कनखल जैसे छोटे कस्बे की चर्चा है जो एक बंगाली के लिए कदापि संभव नहीं था। तस्माद् गच्छेरनु कनखलं शैलराजावतीर्णां। शकुंतला मेरे ही ज़िले की मालिनी नाम की नदी के तट पर पाई गई थी। शकुंतला भले ही अब न हो, वह नदी अभी भी उसी तरह स्थित है। दुष्यंत जो थे वे हस्तिनापुर के थे जो मेरे ज़िले से एकदम सटा है। कवि ने 'रघुवंश' में कहा है कि सोने की मिलावट या शुद्धि अग्नि में ही देखी जाती है और यह बात उन्होंने इस कारण कही क्योंकि भारतीय गज़ेटिय के अनुसार मेरे ज़िले में कभी सोना पाया जाता था। नदी-नाले और झील जैसी किस्म की चीज़ें तो इस ज़िले में हैं ही मगर बड़ी बात यह है कि हिमालय पास होने के कारण यहां झरने भी हैं और कालीदास को झरने से विशेष प्रेम था। 'रघुवंश' में उन्होंने कहा कि अस्थिर निश्चयवाले मन को और नीचे जाते पानी को कौन रोक सकता है? पानी जो नीचे जाता है वह झरने का ही जाता है। मैंने आज तक ऐसा झरना नहीं देखा जिसका कि जल ऊपर की दिशा में जाता हो। हिमालय और वहां की पुष्पवीथियों की जो चर्चा उन्होंने की है वह बाहर का कोई आदमी कर ही नहीं सकता, बाहर का आदमी तो फूलों के नाम ही पूछता-पूछता बूढ़ा हो जायेगा ओर 'ऋतुसंहार' के नाम पर 'कविसंहार' लिखेगा। अंत में चलकर, कवि ने प्रकृति और प्रेम का जो समन्वय स्थापित किया वह मेरे जनपद में अभी तक विद्यमान है। मेरे ज़िले में काफ़ी से ज़्यादा प्रेम-लिलाएं अभी तक जंगलों में ही संपन्न होती हैं।

(स) कालिदास अश्वघोष के पूर्ववर्ती थे। घोड़े का घोष न रहा होगा तो सिर्फ़ गर्दभघोष ही रहा होगा। गधों के संदर्भ में बाराबंकी के बाद दूसरा ज़िला मेरा है। विश्वास न हो तो मुझसे मिलिए। सब बात साफ़ हो जाएगी।

(द) सिर्फ़ आम्रफल के आधार पर ही इतने महत्वपूर्ण प्रश्न का निर्णय नहीं किया जा सकता। फल और भीं हैं ज़माने में दशहरी के सिवा। दुष्यंत की शकुंतला के प्रति आसक्ति के अवसर पर कवि शेष फ़लों की चर्चा करते हुए पके हुए खजूर और इमली की भी चर्चा करता है। शकुंतला को इमली का स्थान दिया गया-न अंबिया का। और सबसे बड़ी बात तो गन्ने के जिक्र की है:'रघुवंश' में 'इक्षुच्छायनिषादिन्यस्तस्य गोप्तुर्गुणोदयम' वाली जो पंक्ति है वह बड़े काम की है। 'अभिज्ञानशाकुंतलम् में विशाल वृक्ष के नीचे बैठकर यदि कोई हरिणी अपने प्रेमी किसी काले मृग के सींग से अपनी बाईं आंख खुजलाया करती थी तो उसी प्रकार रघुवंश में लोगबाग गन्ने के पेड़ की छाया में बैठकर अपने रजा के गुण गाया करते थे। और गन्ने के मामले में पश्चिम उत्तर प्रदेश हमेशा से आगे रहा। मेरे विचार में कालिदास जैसे बड़े कलाकार के संदर्भ में आम जैसे छोटे साइज के फ़ल के स्थान पर गन्ने जैसे बड़े कद की चीज़ को प्रमाण मानना कहीं ज़्यादा युक्तिसंगत होगा। और फ़िर आम तो सभी को पसंद थे तो क्या सारे के सारे कवि बंगाल के ही हो गए? आम और कालिदास चीज़ ही ऐसी है कि वाणभट्ट तक को पूछना पड़ा कि 'कवि कालिदास की आम्रमजरी के समान सरस और मधुर वाणी से किसके ह्दय में आनंद का उद्रेक नहीं होता?'' इस पंक्ति में वाणभट्ट ने एक ही बाण से कालिदास और आम दोनों को बराबर कर दिया। और हां, वैसे आम के संदर्भ में मेरा इलाका हमेशा बहुत आगे रहा। इधर के विशाल बागातों के आम यूरोप तक जाते रहे।

(क) प्रकृति को त्यागकर यदि पुरुष को पकड़े तो सारी समस्या अनायास ही हल हो जाती है। जिस प्रकार के पात्रों को कालिदास ने अपनी कृतियों में लिया है वे मूलत: मेरे ही जनपद में होते थे और बाद में यहीं से बाहर गए। उदाहरण के लिए मैं कुछ पात्रों को ही लूंगा। सबसे पहले मैं दुष्यंत को पकड़ता हूं, ठीक उसी तरह जैसे उसने शकुंतला पकड़ी थी। न जाने कितनी रूपवती रानियों के होते हुए भी उसने जायका बदलने के हेतु शकुंतला से गंधर्व विवाह किया। ऐसा लंपट व्यक्ति- खासतौर पर जो अपनी ही बीवी को पहचानने से इनकार कर दे-मेरे ही क्षेत्र में पैदा हो सकता है, अनयत्र नहीं। शकुंतला का चरित्र भी यही साबित करता है; एक ओर तो यह हालत है कि कण्व ऋषि सौदा-सुलुफ़ लेने ज़रा आश्रम से खिसके और इन्होंने पराए पुरुष से नैना मिलाने शुरू कर दिए और दूसरी ओर यह स्थिति है कि जब दुष्यंत के दरबार में पधारती है तो 'अवगुंठनवती' होकर पधारती है। ऐसी कन्याओं की मेरे इलाके में अभी भी कमी नहीं।

कालिदास का जो विदूषक था वह एकदम मेरी ही तहसील का माल था व चंद्रमा को मक्खन का गोला न समझता। सेनापति जब राजा के सामने शिकार का प्रस्ताव रखता है तो विदूषक कहता है कि ''भागो, दूर हटो। बड़े आए मृगया पर ले जानेवाले! महाराज शांत-चित हैं। जाओ, तुम्हीं वनों में भटको और किसी ऐसे बूढे भालू से निकट संपर्क स्थापित करो जो आदमी की नाक चट करने को तरस रहा है।'' मेरे ज़िले की पुरानी परंपरा के अनुसार विरह-पीड़ित दुष्यंत जब मदनदेव के बाणों की चर्चा करते हैं तो यह त्यागी जाति का विदूषक उन बाणों का मुकाबला करने के लिये लाठी उठाता है। 'शाकुंतलम्' के छठे अंक में पुलिस अफ़सरों के संवाद भी बड़े काम के हैं। अंत में चलकर जब खुशामदी सेनापति और रिश्वतखोर सिपाहियों की चर्चा आती है तब तो कवि कालिदास पर मेरे ज़िले के अलावा किसी और क्षेत्र का हक रह ही नहीं जाता।

(ख) मेरे अंतिम तर्क दो हैं। पहला तो यह कि आज तक ऐसी कोई सामग्री किसी विद्वान अनुसंधानकर्ता के हाथ नहीं आई जिसमें यह लिखा हो कि कवि कालिदास मेरे ज़िले के नहीं थे। दूसरा तर्क यह है कि मेरी वाणी स्वीकार करने से झगड़ा जो है वह सदा के लिए समाप्त हो जाएगा। साहित्य के इतिहास में यह एक बड़ी उपलब्धि होगी। विद्वान लोग अब कालिदास को छोड़कर भवभूति पर युद्ध प्रारंभ करेंगे। वे कभी नहीं थकेंगे। लंदन की 'बिग बेन' थकावट से रुक गई पर हमारे शोधकार कभी नहीं थके। संशय से ही ज्ञान का द्वार खुलता है। यह दीगर बात है कि संशय के कारण ज्ञान के अलावा कभी-कभी और द्वार भी खुलते रहे।

तो मैंने वर्षों के सतत परिश्रम से सिद्ध कर ही दिया कि कालिदास का सही जन्मस्थान कहां था। मेरे जो तर्क हैं वे 'विक्रमोर्वशीयम्' की इस पंक्ति की याद दिलाते हैं-'कूजितं राजहंसानां, नेदं नूपुरशिजितम्'। यह राजहंसों का कूजन है, कोई नुपुर-ध्वनि नहीं। आपको उचित होगा कि मेरी सम्मति को स्वीकार करें। यह कवि की इच्छा के अनुकूल होगा। 'मालविकाग्निमित्र' में कालिदास कहते हैं कि मूर्ख लोग जो हैं वे दूसरों के विश्वास से अपना मत निश्चित करते हैं। क्या आप कवि की वाणी की अवहेलना करेंगे?

अब तो बस एक ही बात बचती है और सोचता हूं कि उसे भी बोल दूं। प्रशासन को उचित होगा कि वह मुझे काफ़ी बड़ी धनराशि दे ताकि मैं अपने ज़िले में कहीं सही जगह पर 'कालिदास भवन' का निर्माण कर सकूं। इस भवन में शकुंतला का बंदोबस्त भी होगा, मृगया का भी और सपरिवार मेरे रहने-सहने का भी। विदूषक का पार्ट दर्शक लोग अदा करेंगे। ज़ायका बदलने के लिये कालिदास की पुस्तकें भी एक छोटे-से कमरे में रख दूंगा। गोवर्धनाचार्य ने कहा था' साकूतमधुरकोमलविलासिनी कंठ कूजित प्राये, रतिलीला कालिदासोक्ति।' जो लोग गोवर्धनाचार्य के मत के होंगे वे कालिदास पढ़ेंगे:जो समझदार होंगे वे प्रियंवदा के साथ बीयर पिएंगे।

निगरानी कमेटी : बिल्लियां करेंगी दूध की रखवाली

पेज छह का शेष

मदान द्वारा की टिप्पणी पर शिकायत कर्ता ने उससे पूछा कि मुझे सम्पर्क किये बिना आप ने किस आधार पर आपने यह टिप्पणी लिख दी ,तो मदान ने कहा कि मैने गुड फेथ में कर दी है तू तो अपना आदमी है ।

हांलाकि निगरानी कमेटी के अन्य सदस्यों के सामने अशोक मदान की इस कार्य प्रणाली का जिक्र किया गया तो उन्होने हैरानगी जताते हुये कहा कि यह शिकायत हमारी जानकारी में नही है, जबकि मदान तो हमेशा यही निर्देश देता है कि दोषियों के खिलाफ जाँच करने पर कभी भी सिफारिश व दबाव में नही आना, और स्वयं कैसे एक तरफ रिपोर्ट कैसे कर दी।

सूत्रों से मिली जानकारी अनुसार ब्रम्कुमारीय आश्रम में कुछ अय्याश किस्म व असामाजिक तत्वों के लोगो का भी आना जाना लगा रहता है, जिनमें से कुछ एक के साथ अशोक मदान की भी उठ बैठ है, उनकी सिफारिश पर मदान ने झूठी रिपोर्ट बनाई है ।

उल्लेखनीय है मिली जानकारी अनुसार पहले भी नगर निगम में कार्यरत अधिकारी ब्रम्कुमारीय आश्रम में आता जाता था । जो एक महिला के साथ दुष्कर्म के मामले में पकड़ा गया था और कुछ माह जेल काटने के बाद जमानत पर रिहा होने के बाद उस महिला को ले दे कर मामले को समाप्त करा दिया ।

जबकि दूसरी तरफ नगर निगम अधिकारी कह रहे है कि ब्रम्हकुमारीय संस्था को 2 अप्रैल 2014 को शिकायत अनुसार नोटिस भेज दिया गया था ये समझ से परे है कि संस्था का आयोजन 21 मार्च 2014 को सम्पन्न हो गया शिकायत 17 मार्च 2014 को की गई तब नोटिस 2 अप्रैल 2014 को क्यों दिया गया । जब शिकायत आयोजन से पहले कर दी गई तो सी एम विण्डो पर इसे पुरानी शिकायत बताने के पीछे निगरानी कमेटी व नगर निगम अधिकारीयों का बताने में क्या प्रयोजन है । अगर ब्रम्कुमारीय आश्रम की शिकायत पुरानी मान ली जाये तो उन दुकानदार जिन्होने जुर्माना नही भरा का भी मामला पुराना होना चाहिये चेहरा देख कर कानून नही बदला जा सकता । अगर कारवाई में ढील हुई है तो दोषी नगर निगम अधिकारीयों के खिलाफ कारवाई होनी चाहिये तथा निगरानी कमेटी के चेयरमैन जिसने बगैर तथ्य जाने ही सी एम विण्डों को गुमराह कर के ब्रम्कुमारीय संस्था कम से कम सौ बोर्ड की पैनल्टी बचा सरकार के राजस्व 3 लाख का चूना लगाने बारे चेयर मैन को भी निलम्बित किया जाना चाहिये । ताकि निगरानी कमेटी व सी एम विण्डो बनाने का लाभ आम जनता को मिल सके नगर निगम को दोहरी नितियों के कारण जो दुकानदारों में रोष व्याप्त है उन्हे राहत मिल सके है ।